International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-08-2023, Accepted: 29-08-2023, Published: 15-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 16-18

प्रकृति से परे उठती जीवन की उपलब्धिः महादेवी वर्मा जी के 'रश्मि' काव्य में 'जीवन' कविता

कल्पना वर्मा
हिंदी विभाग, राम लाल आनंद महाविद्यालय, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत

सारांश
26 मार्च, 1907 को फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में एक ऐसे अंतर्मुखी व्यक्तित्व का जन्म हुआ। जिनके विचारों में समाज सुधार, नारी स्वतंत्रता पर दृढ़ता, सामंजस्य व आध्यात्म के गुढ़ रहस्य को सदैव देखा गया है। वे जागरूक प्रतिभा की धनी, दया व ममता की प्रतिमूर्ति बन मानव का प्रकृति से रहस्य रूप में जो संबंध मिलता हैं, उनका आपस में सामंजस्य बैठा अपने काव्य को सर्जनात्मक रूप देती रही। छायावादी काव्य को जहां प्रसाद ने प्रकृति तत्व दिया, निराला ने उसमें मुक्त छंद की अवधारणा की ओर पंत ने उसे सुकून सुकोमल कला प्रदान की। वहीं छायावाद के कलेवर में प्राण प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त हैं। भाव अनुभूति की गहराई उनके काव्य में अधिक मिलती हैं। रश्मि काव्य में उन्होंने भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। महादेवी जी अपने साहित्य की प्रेरणा से काव्य अनुरागयों को आकर्षित करती रहीं। धार्मिक भाव प्रबल होने के कारण भी आध्यात्मिक व मानवतावादी भाव उनके काव्य से होकर गुजरते हैं। त्याग, सेवा और समर्पण ही महादेवी जी के जीवन उदाहरण से स्पष्ट होता हैं। महादेवी जी ने स्वयं कहा,
"अमरता है जीवन का हास,
मृत्यु जीवन का चरम विकास।" (29)
रश्मि काव्य की ष्जीवनष कविता में चीर जीवन इच्छा को मिथ्या तथा मानव प्रगति व परिवर्तन को केवल मृत्यु ही पूर्ण कर सकती हैं। मनुष्य असीम सौंदर्य और अनंत काल तक फैले वैभव का प्राणी हैं। अनंत आकाश, प्रचण्ड जलाने वाली अग्नि, मृदुल और शीतलता प्रदान करने वाला जल, समस्त दिशाओं में सौरभ फैलाने वाली हवा, असंख्य जीवन उत्पन्न करने वाली धरा जिस पर मानव का निर्माण हुआ हैं, इन सब को भी मिटना ही पड़ता हैं, क्योंकि विकास पथ मृत्यु से ही होकर जाता हैं। यही परिवर्तन का सार अलक्ष्य रूप से उसे लक्ष्य तथा पूर्णता की ओर ले चलता हैं।

मूल शब्दः समाज सुधार, नारी स्वतंत्रता, आध्यात्मिक, मानवतावादी भाव

छायावाद का आधार चार महान स्तरों पर टिका है। इनमें से एक स्तम्भ महादेवी जी को माना गया। इनके बिना छायावाद अधुरा सा प्रतित होता है। प्रेम में विरह का वर्णन साहित्य में बहुत पहले से चला आ रहा था। छायावाद इस तरह के काव्यों से भरा हुआ है। अन्य तीन आधार स्तम्भों (निराला, प्रसाद, पंत) की अपेक्षा महादेवी जी का अधिकतर काव्य इसी विरह में आनंद की तलाश करता सा प्रतीत होता है। हदय जनित भाव को प्रकृति के साथ सामंजस्य कर जीवन के नए रूपों को काव्य रूप में अपनी लेखनी से अस्तित्व प्रदान किया। जीवन की क्षणभंगुर के गूढ़ ज्ञान में मिलन को क्षणिक व विरह को चीर व सच्चा माना रश्मि महादेवी जी का दूसरा काव्य संग्रह है। रश्मि काव्य में वर्मा जी की लेखनी की प्रोढ़ता प्रतित होती है। इस काव्य के रूप में संसार की क्षणभंगुरता, जीवन की अस्थिरता, विरह में आनंद, द्वंद, संघर्ष की मनोदशा को प्रमुखता दी गई है। छायावाद का समय देश में नव जागरण व संघर्ष और मुक्ति का समय था। नारी भी अपनी मुक्ति का आधार ढूंढ़ रही थी। महादेवी जी के रूप में नारी मुक्ति के दुर्लभ स्वपन को नयी, स्पष्ट उड़ान मिली। रश्मि काव्य इंद्रधनुष आभा को साथ लेकर प्रकट हुआ। यह काव्य 1932 में प्रकाशित महादेवी जी का दूसरा कविता संग्रह है। आध्यात्मिकता और दार्शनिकता के झीने अंचल से छलकते मृदुल भाव एक अलग जगत की सृष्टि करते हैं। लौकिक व अलौकिकता के भाव को नया धरातल देता, जड़ को चेतना के नए सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है। संतों की भांति योगिनी आत्मा का प्रियतम के प्रति प्रेम निवेदन सहदयों के मन में भी कोमल भाव को जगाने वाला है। रश्मि काव्य की भूमिका में स्वयं महादेवी जी ने कहा है, "संसार जिसे दुख और अभाव के नाम से जानता है, वह मेरे पास नहीं, जीवन में मुझे बहुत दुलार और बहुत आदर और बहुत मात्रा में सब कुछ मिला है, परंतु उस पर पार्थिव दुख की छाया नहीं पड़ सकी, कदाचित उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी मधुर लगने लगी है।" सुख दुख दोनों ही जीवन को सार्थक बनाते हैं। सुखी व्यक्ति अपने सुख को संसार की वेदना में घोल दे तो वह अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। व्यक्तिगत सुख व दुख सृष्टि में धुल कर किसी एक व्यक्ति का सुख व दुख न रहकर संपूर्ण विश्व का सुख व दुख बन जाता है। इसमें चल व अचल रूप से सम्पूर्ण संसार विद्यमान हो जाता है। फिर यह भाव व्यष्टि के न रहकर समष्टि की भावना बन जाते हैं।

उद्देश्य

रश्मि काव्य की "जीवन" कविता में मनुष्य के निरन्तर परिष्कृत हो चेतन व मानसिक जगत, वस्तु जगत से प्रभावित होता है। मानव जगत के असीम सौन्दर्य और अनन्त वैभव का का प्राणी है।
"विश्व में यह भोला जीवन,
स्वप्न– जागृति का मूक– मिलन,
बांध अच्चल मे विस्मृति धन,
कर रहा किसका अन्वेषण" (27)

मनुष्य अपने भोले पन के कारण इस बाह्य संसार ही से अपने आपको पुण मान लेता है, किन्तु बाहय जगत जो स्वपन मात्र है सदैव जटिल समस्या से हमें घेरे रहता है। मानव का पूर्ण विकास प्रकृति के साथ एकाकार होकर इस मिथ्या व भौतिक जगत का त्याग कर सृष्टि के रहस्यमई रूप को समझने में है। जीवन का वह संपूर्ण चित्र जो मनुष्य और शेष सृष्टि के रागात्मक संबंध से अनुप्राणित होता है, वही सत्य है।

महादेवी जी ने स्वयं कहा, "जीवन की एकता का छिपा हुआ सूत्र ही कविता का प्राण है। जिस प्रकार वीणा के तारों के भिन्न–भिन्न स्वरों में एक प्रकार की एकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य के हृदय में एकता छिपी रहती है। यदि ऐसा न होता तो विश्व बेसुरा हो जाता।"

"धूलि के कण मे नभ की चाह,
बिन्दु मे दुख का जलधि अथाह,
एक स्पन्दन में स्वपन अपार,
एक पल असफलता का भार" (27)

मनुष्य इस प्रकृति में पैदा हुआ छोटा सा जीव है, किंतु उसकी इच्छा ऐसी प्रतीत होती है, जैसे एक छोटा सा कण संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने में समा लेने का स्वपन देखता है। मनुष्य के जीवन में आंसुओं का अथाह सागर है, जीवन के मूल तत्व को जानने के लिए उसका ज्ञान सूक्ष्म प्रतीत होता है। जीवन की विषमताओं में सत्य जो परिवर्तन की लहरों में क्षणिक हो अस्तित्व खोता जाता है, एक तरफ मनुष्य की हर धड़कन में हजारों हजारों स्वपन उदित होते हैं, तो दूसरी तरफ असफलता का डर उसे निराशा के सागर में डूबा देता है। मनुष्य जिन घटनाओं को जीवन समझ लेता है, वह केवल बाहय सत्य की गहराई और उसका आकर्षण मात्र ही है।

"नील नभ का असीम विस्तार,
अनल के धुमिल कण दो चार,
सलिल से निर्भर वीचि– विलास,
मन्द मलयानिल से उच्छ्वास," (28)

जीवन चिन्तन के शैश्रुव में ही भावना तरूण हो, प्रकृति से बौद्धिक समझोता करके उसके साथ रागात्मक सम्बन्ध पक्का कर लेती है। छायावाद और प्रकृति का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। महादेवी जी छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती हैं। उन्होंने अपने काव्य में बिंब, प्रतिबिंब के माध्यम से मानव तथा प्रकृति के सम्बन्ध में प्राण डाल दिया। वे अखिल ब्रह्माण्ड में सौन्दर्य व रहस्य के दर्शन करने वाली अद्भुत चितेरी कवित्री थीं। अद्वैतवाद जिसे चिंतन कहता है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है। महादेवी जी की कविता "जीवन" में आत्मा की मूल अनुभूति की धारा रहस्यवाद है। रहस्यवाद जीवात्मा की अंतनिर्हित प्रवृत्ति का प्रकाश है। मानव दिव्य और अलौकिक शक्ति से निश्छल सम्बन्ध जोड़ना चाहता है।

"दृगो में सोते है अज्ञात,
निदाघों के दिन पावस–रात,
सुधा का मधु हालांकि का राग,
व्यथा के घन अतृप्ति की आग" (28)

मानव अपने नेत्रों में अप्रत्याशित क्रोध और आसू बनकर बहने वाली करुणा दोनों को साथ रखता है। मानव के आसूओं में करुणा, इच्छाओं, स्वप्न की पूर्ति और जीवन का स्पन्दन है। मानव जीवन व्यथा और अतृप्ति का कोषागार है। मानव अपने जीवन से वेदनाओं के प्याले भरकर उसमें मधुरतम स्वप्नों को मिला, उज्जवल भविष्य की नवप्रभात को देखता है। मानव के बाहरी जीवन में जो कुछ भी निर्मित और ध्वस्त हुआ है, उसकी ही शक्ति और दुर्बलता को प्रदर्शित करता है। जीवन की विषमताओं और चिरंतन सत्य जो परिवर्तन की लहरों में क्षणिक अभिव्यक्त होता रहता है। मनुष्य को प्रकृति से तादात्म्य अनुभव करने की उसके व्यक्तिगत सौंदर्य, उनकी समष्टि में रहस्य अनुभूति की सभी सुविधाएं सहज मिल जाती हैं।

"काल के प्याले में अभिनव,
ढाल जीवन का मधु –आसव,
नाश के हिम अधरों से, मौन,
लगा देता है आकर कौन?
बिखर कर कन कन के लघु प्राण
गुनगुनाते रहते यह तान, (29)

मनुष्य का जीवन नश्वर है। उसकी अमर होने की इच्छा स्वपन लोग की परियों के समान है। इस भौतिक जगत की नहीं, जिस प्रकार बुलबुला समुद्र का इतिहास और अपने बनने और बिगड़ने का कारण नहीं जानता, उसी प्रकार मनुष्य जीवन के रहस्य पर अपने अनभिज्ञता प्रकट करता है। जिस प्रकार वर्षा ऋतु में पानी से भरा हुआ सजीला बादल विद्युत की हंसी फैलाता है, उसी प्रकार किसी प्रिय के सुषमामय प्यार, दुख के आंसू और सुख की हंसी से अपने आप को सजाकर हमारे प्राणों में बरस पड़ता है। जीवन में पग–पग पर सृष्टि के एक–एक स्पंदन और उसके लक्षण में परिवर्तित होते हुए सौंदर्य में हमें एक अज्ञात शक्ति की उपस्थिति का भान होता है। हम उस का आभास मात्र पाते हैं। इसलिए हम उसे देख कर अनदेखा कर देते हैं। परिवर्तन मानव को लक्ष्य और पूर्णता की और खींचता रहता है।

"स्निग्ध अपना जीवन कर क्षार,
दीप करता आलोक–प्रसार;
गला कर मृत्पिरण्डों में प्राण,
बीज करता असख्य निर्माण।
सृष्टि का है यह अमिट विधान,
एक मिटने में सौ वरदान,
नष्ट कब अणु का हुआ प्रयास,
विफलता में है पूर्ति – विकास। (30)

जिस प्रकार मिट्टी के जड़ दीपक को हम अग्नि से सयोग कराके उसे सजीव और प्रकाशमय बनाते हैं, उसी प्रकार कोई इस जड़ बुद्धि मानव में चेतना डालकर उसे सजीव और प्रकाशित कर जाता है। सुख, दुख, स्वप्न, स्मृति, हंसी से सजा जीवन सौंदर्य की सृष्टि करता है, किन्तु जिस तरह से एक बीज प्रकृति निर्माण के लिए अपने प्राण मिट्टी में गला कर नई प्रकृति का निर्माण करता है, उसी प्रकार मानव विकास भी मृत्यु पथ से होकर जाता है। महादेवी वर्मा जी के काव्य में जीवन का सम्पूर्ण वैविध्य समाया है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव–हिलोरो का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजना ही उन्हें महान कवित्री बनाती है।

निष्कर्ष

"जीवन" कविता के आधार पर निष्कर्ष निकालते हुए, यह कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा जी की यह कविता मनुष्य की मानसिक और भौतिक जगत से प्रभावित होने की अद्वितीयता को दर्शाने का प्रयास करती है। इस कविता में उन्होंने दिखाया है कि मानव जीवन एक मिथ्या और अस्थायी जगत है, जबकि वास्तविकता और सत्य प्रकृति के संग समाहित है। यह कविता मानव के आंतरिक अनुभवों को जगाने का प्रयास करती है और उसे अपने वास्तविक स्वरूप तक पहुंचने के लिए प्रेरित करती है। इसके अलावा, कविता में जीवन के विभिन्न आयामों को जीवंत किया गया है, जैसे कि अस्थायीता, भ्रम, विषमता, आंसू, रहस्य, और आत्मा की मूल अनुभूति। मानव और प्रकृति के संबंध को गहराई से समझने की चेतना को व्यक्त किया गया है और कविता में छायाओं और प्रतिछायाओं के माध्यम से उनके संबंध को प्रकट किया गया है। असली पहचान को प्राप्त करने के लिए, मनुष्य को अपनी भौतिकता से परे उठना है। महादेवी वर्मा जी का लेखन छायावादी आंदोलन के एक महत्वपूर्ण और महान धारणा को प्रतिष्ठित करता है। उनकी कविताएं उच्च रूप से सुंदर हैं और मन, आत्मा, समाज, और प्रकृति के अन्तरंग सत्यों को प्रकट करती हैं। उनके रचनात्मक योगदान ने हिंदी साहित्य को एक

नया आयाम दिया है और उन्हें आज भी एक प्रमुख साहित्यिक आदर्श के रूप में मान्यता है।

संदर्भ सूची

1. महादेवी वर्मा, ″रश्मि″ साहित्य भवन (प्राइवेट) 1962 पृष्ठ 27,28,29,30.
2. नामवर सिंह, ″छायावाद″ राजकमल प्रकाशन, 2006.
3. ललिता वर्मा. "महादेवी वर्माः आधुनिक युग की कवित्री." गंगा पुस्तक मंदिर, 2015.
4. जगमोहन गाड़े. "महादेवी वर्माः जीवनी और काव्य." साहित्य अकादमी, 2006.
5. अशोक कुमार नंदन. "महादेवी वर्माः साहित्यिक संगीत." वाणी प्रकाशन, 2012.
6. श्रीधर मौर्या. "महादेवी वर्माः कविता के अंतर्मन." संदर्भ प्रकाशन, 2010.
7. वेद प्रताप वैद्य. "महादेवी वर्माः जीवन और साहित्य." राजकमल प्रकाशन, 2008.
8. विनय कुमार सिंह. "महादेवी वर्माः काव्य और जीवनी." हिन्दी प्रचारिणी सभा, 2014